EDUZONE: International Peer Reviewed/Refereed Multidisciplinary Journal (EIPRMJ), ISSN: 2319-5045
Volume 11, Issue 1, January-June, 2022, Impact Factor: 7.687 Available online at: www.eduzonejournal.com

मुंशी प्रेमचंद की साहित्यिक मान्यताएँ

डॉ० प्रवेश कुमारी

सहायक प्रोफेसर, टीकाराम गर्ल्स कॉलेज, सोनीपत (हरियाणा)

Author Email: pparveshrapria@gmail.com

सार

मानव एक सामाजिक प्राणी है। समाज हमारे आपके जीवन की प्रतिध्वनि होता है। समाज अत्यन्त व्यापक और उसकी समस्याएँ और भी अधिक व्यापक है। सारी चेतना भी व्यक्ति विशेष की न होकर एक ही काल में अनेक व्यक्तियों या समुदाय, समाज राष्ट्र या सम्पूर्ण मानव जाति की सम्पति ही सामुदायिक चेतना है।किसी देश व काल विशेष से संबंधित मानव समाज में अभिव्यक्ति परिवर्तनशील जागृति से समाज के साथ और उसके राजनीति, अर्थशास्त्र, धर्म संस्कृति आदि के परस्पर संबंध का अवलोकन कर लेना ही संक्षेप में काल विशेष में समाज में सुधार के लिए किए गए प्रयास ही सामाजिक चेतना के अर्न्तगत आते यह चेतना प्रेमचन्द्र के साहित्य में स्वतः परिलक्षित है।

मुख्य शब्द :– सामाजिक चेतना, मध्यवर्गीय समाज, समाज सामाजिक बुराईयाँ।

भूमिका

प्रेमचन्द के साहित्यिक जीवन का प्रारंभ सन् 1901 से होकर अंत अक्टूबर सन् 1936 में उनके स्वर्गरोहरण के साथ समाप्त हो जाता है। यह काल राजनीतिक, सामाजिक एवं आर्थिक दृष्टिसे उथल–पुथल का था। देश में की एक लहर फैल रही थी। प्रेमचन्द के काल में समाज सुधार का आंदोलन तीव्र गति से आगे बढ़ने लगा। सामाजिक चेतना की लहर अठखेलिया कर रही थी। ऐसे में प्रेमचन्द रूपी कलम के सिपाही ने उपन्यास के रूप में मोती लिखे 1904 में प्रेमा या प्रतिज्ञा, 1906 में वरदान, 1914 में सेवासदन, 1918 में प्रेमाश्रम, 1923 में निर्मला, 1924 में रंगभूमि, 1928 ने कायाकल्प, 1930 में गठन, 1932 में कर्मभूमि, 1936 में गोदान और मंगलसूत्र। विधवा समस्या को प्रतिक्षा में राजनीतिक आंदोलनो एवं आदर्श भी चर्चा विवाद में मध्यम वर्ग की दुर्बलता।

सेवासदन

मुंशी प्रेमचंद्र ने सेवासदन में मध्यवर्गीयपरिवार के जीवन का वर्णन किया और बदलती सामाजिक मान्यताएँ प्रस्तुत की है। सेवासदन में सामाजिक समस्या केसाथआर्थिक और धार्मिक समस्याओं का वर्णन किया है। सेवासदन में दहेज, अनमेल विवाहऔर वेश्या प्रथा पर दृष्टि डाली है। प्रेमचन्द को लगता था कि सदियों से बिगड़ाहुआ हिन्दू समाज जल्द सुधरने वाला नही। समाजमें व्याप्त बुराइयों के चित्रण के साथ–साथ उस पर प्रहार भी किया।लोगो में चेतना का संचार किया है।

वरदान

इसमें मध्यवर्गीय समाज के पक्ष का वर्णन किया है। प्रेमचन्द ने प्रेम और अनमेल विवाह की समस्या का वर्णन किया है।इसमें किसानो की समस्या ओरेकिसानों कीऋणसमस्या कावर्णन किया वरदान में अनमेल विवाह और दहेज की समस्या पर दृष्टि ड़ालकर सामाजिक चेतना का विकास किया।

निर्मला

इसमें प्रेमचंद ने समाज में व्याप्त दहेज की समस्या व अनमेल विवाह की समस्या का वर्णन किया इसमें मुख्य रूप दहेज प्रथा और सामाजिक विकृतियों का चित्रण कर सामाजिक चेतना जागृत की गई है। प्रेमचंद जी ने समाज को यह संदेश दिया है। हमें इस कुप्रथा का अंत करना चाहिए। उनकी दृष्टि में विवाह का आधार धर्म एवं प्रेम का होना चाहिए न कि व्यवसाय का उनका कहना कि जब लड़को की तरह लड़कियों की शिक्षा और जीविका की सुविधाएं निकल जाएंगी तो दहेज प्रथा भी समाप्त हो जाएगी।

प्रतीक्षा

इसमें विधवा समस्या के विभिन्न पक्षों और निम्नवर्गीय समाज की आधारभूमि पर किया। प्रेमचंद्र ने स्वयं जो विधवा विवाह किया है वह इस समाधान में उनकी आस्था का सजीव प्रमाण है। इस उपन्यास में समसामयिक समस्याओं की माँग को ठुकरा नहीं सकें और उनका सजीव चित्रण कर दिया। इस उपन्यास में उन्होंने स्त्रियों की आत्मनिर्भरता के समर्थक थे। सामाजिक चेतना को मुखर करने में इस उपन्यास का कोई सानी नहीं है।

गबन

इसमें मध्यवर्गीय समाज का चित्रण है। इसमें उन्होंने आभूषण को समाज व्यापी रोग के रूप में चित्रित किया है। इसमें उनका लक्ष्य समाज के मध्यवर्ग जीवन का यथार्थ चित्रित करना तथा पुलिस के कारनामों का पर्दाफाश किया है। वे जानते थे रिश्वत लेना एक अपराध है पूंजीवादी व्यवस्था का ही यह परिणाम है जहां धन ही सब कुछ हो वहां पर पढ़े–लिखे लोग स्वार्थ से अंधे बन जाते है। श्रम का महत्व घट जाता है। शहरों के सामाजिक जीवन में धोखा, छल है। इसे दिखाते हुए प्रेमचंद यह संदेश देते हैं कि गांव की सादगी की ओर चलें।

प्रेमाश्रम

इसमें कृषक समाज का यथार्थ वर्णन किया है। इसमें शिक्षा की आलोचना की गई इसमें नौकरशाही को निरकुशल और लूट–खसोट का विस्तृत चित्रण किया है। किसानों की भूमि समस्या है। किसानों से जमीदार और अधिकारी वर्ग भी किसी न किसी रूप में जुड़े हुए। इसमें ग्रामीण समाज को शोषित दिखाया गया है। ग्रामीण समाज का भूमिपति, अधिकारी और महान शोषण कर रहे। प्रेमचंद्र देख रहे थे। देहात उजड़ते जाते हैं और शहरों की आबादी बढ़ रही है। प्रेमचंद्र जी ने अविकसित समाज व्यवस्था में रहने वाले शिक्षित मनुष्य के प्रति अधिक जागरूकता दिखाई है। इस उपन्यास में जमींदार प्रथा के समाप्त होने का वर्णन किया है। इस प्रथा के उन्मूलन से ग्रामीण समाज में चेतना आएगी।

मुंशी प्रेमचंद की साहित्यिक मान्यताएं

रंगभूमि इसमें यथार्थवादी दृष्टि से सामाजिक, राजनीतिक और आर्थिक गतिविधियों, परिस्थितियों का वर्णन कर बदलती हुई मान्यताओं की ओर संकेत करके नया जीवन दर्शन प्रस्तुत कर सामाजिक चेतना पाने का प्रयास किया है। इस उपन्यास में ग्रामीण और नागरिक जीवन का कोई भी ऐसा जीवन पक्षनहीं जिसका विशद रूप चित्रित न किया गया हो। यह उस समय प्रकाशित हुआ था समाज में नए–नए परिवर्तन हो रहे थे। नए आंदोलनों से समाज को जूझना पड़ रहा था। इस उपन्यास से समाज में एक नई चेतना जागृत करने का प्रयास किया था। राजनैतिक आजादी से समाज का भला नहीं होगा। आजादी के बाद सबसे पहले गरीबी के मसले का हल खोजना होगा।

कर्म भूमि

इसमें तत्कालीन प्रणाली की आलोचना एवं किसानों की शोषित दशा का वर्णन किया है। शहर व ग्रामों में व्याप्त अधूत समस्या के प्रति उपन्यासकार जागरूक दृष्टि से देखता है। उस समय की शिक्षा, धर्म, अस्पृश्यता, नारी स्थिति, किसानों का शोषण आदि का चित्रण कर प्रेमचंद्र अपनी सामाजिक सजगता का परिचय देते है।

गोदान

इसमें भारतीय जन जीवन की यथार्थ प्रबलता और सबलता परंपरा और जातीयता संस्कृति और सामाजिकता के साथ वर्ग भेद जन्य शोषण और अत्याचार और उनके विरुद्ध जीवन संघर्ष में सुख–दुख के विविध रूपों का संतोष वर्णन किया है। इस उपन्यास में भारतीय जीवन का गद्य महाकाव्य है।

मंगलसूत्र

इस उपन्यास में उन्होंने पुरानी मान्यताओं को छोड़कर नई मान्यताओं का अपनाना चाहिए। मंगलसूत्र में जितना भी लिखा है यह गोदान से अधिक विकसित है यदि पूर्ण ही जाती तो गोदान से आगे का विकास होता इसमें मजदूर आंदोलन व पूंजीवादी शोषण संबंधी समस्या का वर्णन किया है।इस अधूरे उपन्यास में सामाजिक चेतना कूट–कूट कर भरी हुई है।

निष्कर्ष

प्रेमचंद ने साहित्यकारों को कल्पना के आकाश से यथार्थ धरातल पर लाकर यह संदेश दिया है। साहित्य समाज का दर्पण है। सभी उपन्यासों में सामाजिक चेतना कूट–कूट कर भरी हुई है। प्रेमचंद ने अपने उपन्यासों किसानों की दयनीय दिशा, दहेज प्रथा, पूँजीवादियों, मध्यवर्गीय समाज, ग्रामीण लोगों का जीवन, विधवा समस्या आदि का वर्णन किया है। संक्षेप में कहें तो समाज में सुधार के लिए गए प्रयास ही सामाजिक चेतना के अंतर्गत आते है।

संदर्भ

[1] शर्मा, रामविलास, नई दिल्ली, भारत, प्रेमचंद और उनका युग, राजकमल प्रकाशन
[2] गोपाल, मदन, नई दिल्ली, भारत, प्रेमचंद की आत्मकथा, प्रभात प्रकाशन
[3] राय, अमृत, दिल्ली, भारत, कलम का सिपाही, साहित्य अकादमी

[4] प्रेमचंद दिल्ली, भारत, प्रेमचंद की लोकप्रिय कहानियाँ, राजा प्रकाशन
[5] देवी, शिवरानी दिल्ली, प्रेमचंद घर में, आत्माराम एंड सन्स
[6] वाजपेयी, नंद दुलारे, प्रेमचंद एक साहित्यिक विवेचन